# नागपुर के झंडा सत्याग्रह में जमनालाल बजाज का योगदान

**प्रो. डॉ. रफीक शेख**
**इतिहास विभाग प्रमुख**
**एस. एस. एन. जे. महाविद्यालय**
**देवली, जि - वर्धा (महाराष्ट्र)**
**rafik.ssnj@gmail.com**

**सारांश (Abstract):-**

राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में झंडा सत्याग्रह का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह पहला सत्याग्रह था जो कि राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित होकर शुरू किया गया था और जिस में भाग लेने के लिए देश के कोने-कोने से स्वयंसेवक आंदोलन के मैदान में पहुंचते थे। इस सत्याग्रह का श्रीगणेश करने का श्रेय जमनालाल बजाज को ही जाता है। उन्हीं के नेतृत्व में यह आंदोलन चला सन 1923 में जब महात्मा गांधी जेल में थे तब जमनालाल को अपनी सत्याग्रह पूर्ति की आजमाइश करने का मौका मिला। (हरीभाऊ उपाध्याय पृष्ठ- 95)

प्रस्तुत शोध पत्र में जमनालाल बजाज के नागपुर झंडा सत्याग्रह का परिचय देना। झंडा सत्याग्रह के दौरान अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार किए जाने पर जेल में एक सादा जीवन,यह देश के प्रति समर्पण की भावना को दर्शाना। राष्ट्रीय झंडे के अपमान के विरोध में अंग्रेजों को सत्याग्रह के माध्यम से चुनौती देना। झंडा सत्याग्रह के माध्यम से राष्ट्रीय झंडे के प्रति अपनी राष्ट्रीय भावनाओं, आदर, और सद्भावना को उन्होंने कैसे प्रकट किया। जमनालालजी के इन विभिन्न वयक्तिक पहलुओं पर "नागपुर के झंडा सत्याग्रह में जमनालाल बजाज का योगदान" इस शोधपत्र मे प्रस्तुत विवरण स्पष्ट किया गया है।

**शब्दकोश (keywords) :-**

अंग्रेजी द्वारा राष्ट्रीय झंडे का अपमान, झंडा सत्याग्रह द्वारा अंग्रेजों को चुनौती, जमनालालजी गिरफ्तार, झंडा सत्याग्रह की सफलता।

**अनुसंधान के उद्देश्य ( Objective of Research paper):-**

1. राष्ट्रीय झंडे के प्रति प्रेम, सद्भावना और आदर को जमनालालजी के झंडा सत्याग्रह द्वारा प्रस्तुत करना।
2. राष्ट्रीय झंडे के अपमान को झंडा सत्याग्रह द्वारा जमनालालजी के नेतृत्व में अंग्रेजों को चुनौती कैसे दी गई, यह स्पष्ट करना।
3. गांधीजी के मार्ग द्वारा जमनालालजी ने झंडा सत्याग्रह को कैसे सफल बनाया यह स्पष्ट करना।
4. झंडा सत्याग्रह द्वारा जमनालाल बजाज के कार्यों और व्यक्तित्व का परिचय देना।

**परिचय :-**

झंडा सत्याग्रह एक ऐतिहासिक आंदोलन था। सन 1923 में झंडा सत्याग्रह में अंग्रेजों ने कुछ इलाकों में राष्ट्रीय झंडे को ले जाने पर रोक लगा दी थी। जबलपुर में अंग्रेज पुलिस ने तिरंगे को अपने पैरों के नीचे कुचलकर उसका अपमान किया था। जमनालालजी के लिए राष्ट्रीय झंडे का अपमान सारे राष्ट्र का अपमान था। अंग्रेजों के इस नीति का उन्होंने विरोध करने निश्चय किया और अंग्रेजी शासन को चुनौती देने की ठान ली।(कथनी और करनी पृष्ठ-20)

**अंग्रेजों द्वारा राष्ट्रीय झंडे का अपमान:-**

22 अप्रैल, 1923 में जब जमनालाल जी कलकत्ता से वर्धा पहुंचे, तब एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए उन्होंने घोषणा कर दी कि, "झंडे का अपमान सहन नहीं किया जाएगा। इसके विरोध में मई, 1923 से सत्याग्रह शुरू कर दिया जाएगा।" उन्होंने यह भी कहा कि, "मैं अपने उत्तरदायित्व और क्रांति की तैयारी देखकर तथा सोच समझकर ही सत्याग्रह का प्रारंभ करने की बात कर रहा हूं, राष्ट्रीय झंडे का अपमान सारे राष्ट्र का अपमान है। लोग अनुभव करले कि अंतिम सीमा तक कष्ट सहने की तैयारी करनी होगी। सत्याग्रह का मुख्य तत्व यह है कि दूसरे के प्रति प्रेम और सद्भावना रखते हुए स्वयं कष्ट सहन किया जाए और बड़े से बड़े स्वार्थ त्याग के लिए सदा तैयार रहे" जमनालालजी की घोषणा सारे प्रांत में संदेश के रूप में फैल गई। प्रांत में चारों और सत्याग्रह की तैयारियां होने लगी। जमनालालजी अगले दिन ही नागपुर आ गए और वहीं रहकर सत्याग्रह की तैयारी में जुट गए। 1 मई 1922 के दिन असहयोगाआश्रम से 10 युवक राष्ट्रीय झंडा फहराते हुए और 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्ता हमारा' गाते हुए लड़ाई के मैदान (झंडा चौक) की ओर चले। यह स्थान आश्रम से 3 मील की दूरी पर था। मार्ग में स्थान-स्थान पर उन वीरों की पूजा हुई और उनका पुण्य हारों से अभिनंदन किया गया। झंडा चौक का दृश्य तो देखने योग्य था। वे सत्याग्रही वहां जाकर पुलिस की छाती से छाती अड़ायें खड़े हो गए। उनके दो फलांग पीछे 10 वीरों का दूसरा जत्था खड़ा था। इन दोनों के बीच में जमनालालजी खड़े थे। लगभग तीन फर्लांग की दूरी पर दर्शकों का एक बहुत बड़ा समुदाय था। पुलिस भी सदल-बल वहां तैयार खड़ी थी। जिला मजिस्ट्रेट जमनालालजी से कहा कि 'दफा 144 लगा दी गई है और आगामी दो मास में कोई भी जुलूस सिविल लाइंस में नहीं निकाल सकेगा और ना 25 व्यक्तियों से ज्यादा की सभा ही हो सकेगी।' जुलूस अपने निर्दिष्ट स्थान से निकल गया और उस दिन और कोई घटना नहीं हुई। उन्होंने नागपुर की एक सभा में कहां, "नागपुर आने पर मेरे दिमाग को कुछ शांति मिली।... नागपुर ने बता दिया कि यहां पर कुछ काम हो रहा है।... मुझे तो एक ही बात पसंद आती है-काम करना।...नागपुर ने आज जो करके दिखाया है वह अन्य प्रांतों के लिए भी अनुकरणीय है। मैं इस झंडे की लड़ाई को खास तौर पर पसंद करता हूं, क्योंकि यह स्वार्थों की नहीं उसूलों की लड़ाई है।"(हरीभाऊ उपाध्याय पृ. 95-98)

**झंडा सत्याग्रह द्वारा अंग्रेजों को चुनौती :-**

'जालियांवाला बाग दिन' उन दिनों प्रदेश भर में जगह-जगह मनाते थे। और उस के उपलक्ष में जुलूस निकालते थे। नागपुर में जब इस दिन के उपलक्ष में जुलूस निकाला गया तो पुलिस ने नागपुर की सिविल लाइन में जुलूस के प्रवेश को रोका तो झंडे की मान और रक्षा के लिए लोगों में एक नया जोश उमड़ पड़ा। हर दिन नागपुर में सिविल लाइन के तरफ झंडे का जुलूस जाता था और पुलिस रोज सत्याग्रही को पकड़कर जेलों में डाल देती थी। ब्रिटिश सरकार ने पहले पहल तो सत्याग्रहीयों को साधारण सजा दी, जब संग्राम की अग्नि बढ़ने लगी तब सरकार का रूप भी कठोर होता गया। अंत में काफी तादाद में सत्याग्रही जेल जाने लगे अन्य प्रांतों के लोग भी सत्याग्रह के लिए नागपुर आने लगे जमनालालजी के साथ 220 अन्य सत्याग्रहीयों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। जमनालालजी को 18 माह की सजा सुनाई गई। इस सत्याग्रह ने जब भीषण रूप धारण कर लिया तबतक करीब बारह सौ सत्याग्रही जेल जा चुके थै और जेल जाने वालों का ताता जारी ही था। इस सत्याग्रह को हर प्रांत से सहानुभूति उमड़ पड़ी। (घनश्याम दास बिडला पृष्ठ 45- 46)

**जमनालालजी की गिरफ्तारी :-**

नागपुर में जमनालालजी ने झंडा सत्याग्रह का आयोजन तथा उसका नेतृत्व किया जो राष्ट्रीय स्तर का पहला आंदोलन था। झंडा सत्याग्रह के विरोध में अंग्रेजों ने 17 जून 1923 को गिरफ्तार कर उन्हें डेढ़ साल की सजा सुनाई गई और उन पर 3000 रुपए का जुर्माना लगाया गया। जमनालालजी ने जुर्माना देने से इनकार कर दिया। उनकी मोटर और घोड़ा गाड़ी जप्त कर ली गई। अंग्रेजी सरकार ने इन चीजों की नीलामी करके जुर्माना वसूल करने का फरमान जारी किया। नीलामी के लिए पूरे मध्य प्रांत में कोई बोली लगाने वाला नहीं मिला। तथा दूसरे कोई सरकारी अफसरों ने भी उन्हें नहीं खरीदा। उनकी मोटर और घोड़ा गाड़ी को राजकोट ले जाया गया। गुजराती अखबार सौराष्ट्र ने अपने संपादकीय में लिखा कि," वर्धा तथा पूरे मध्य प्रांत में उन्हें कोई देशघातक नहीं मिला। अब यह गाड़ियां देश घातक की तलाश में काठियावाड़ लायी गई है।" आखिरकार राज्य के किसी अंग्रेज अधिकारी ने जमनालालजी की मोटर गाड़ी कुछ सौ रुपयों में खरीदी।

जेल में जमनालालजी के साथ विशेष व्यवहार की आज्ञा हुई थी। लेकिन उन्होंने सी-क्लास में रहना ही स्वीकार किया जहां उन्हें सामान्य कैदियों जैसा शारीरिक श्रम और वैसा ही मोटा भोजन भी खाना पड़ा। जमनालालजी के जेल जाने के बाद उनका झंडा सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व वल्लभभाई पटेल कर रहे थे। आखिर में अंग्रेजी सरकार को झुकना ही पड़ा। झंडे पर लगा प्रतिबंध हटा दिया गया। और सभी सत्याग्रहीयों को आजाद कर दिया गया। अपने 1500 साथियों के साथ जमनालालजी को भी छोड़ दिया गया। (करनी और कथनी पृष्ठ 20-21)

**झंडा सत्याग्रह की सफलता :-**

झंडा सत्याग्रह अखिल भारतीय आंदोलन बन गया था। जमनालालजी के गिरफ्तारी के बाद वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में आंदोलन चलता रहा। उन्होंने इस आंदोलन को बल दिया कॉन्ग्रेस कार्यसमिति ने वल्लभ भाई पटेल को इसके लिए धन्यवाद दिया। सरकारी

बयान के अनुसार इस सत्याग्रह में कुल डेढ़ हजार के करीब स्वयंसेवक गिरफ्तार हुए थे और जमनालालजी के साथ ही सब छूट गए। अंग्रेज सरकार ने सत्याग्रहीयो पर के सारे प्रतिबंध उठा दिए।

3 सितंबर, 1928 को सभी सत्याग्रही यो को छोड़ा गया। जमनालालजी के लिए मोटर लाई गई, लेकिन उन्होंने पैदल ही चलना पसंद किया। जनता ने उनका बड़ा शानदार जुलूस निकाला। झंडा सत्याग्रह की सफलता के बाद उनके पास बधाई के बहुत से पत्र और तार आए। उन्हीं में से एक मौलाना मोहम्मद अली ने अपने टेलीग्राम तार में लिखा, "शाबाश! मेरे बहादुर बनिया खूब किया।तुम्हारे पैर चूमने को तरस रहा हूं।" दिल्ली कांग्रेस ने नागपुर के झंडा सत्याग्रह के आयोजको को और स्वयंसेवकों को अपनी वीरता पूर्ण बलिदान और कष्ट सहिष्णुता द्वारा इस अंग्रेज विरोधी लड़ाई को अंत तक निभाने और इस प्रकार अपने देश के गौरव की रक्षा करने के लिए हृदयसे बधाई दी। इस झंडा सत्याग्रह की सफलता के कारण नेता के रूप में जमनालालजी चमक उठे। इस तरह उनके कार्य का यह यश सौरभ चारों ओर फैल गया। (हरीभाऊ उपाध्याय पृ. 101-2)

**निष्कर्ष :-**

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में जमनालाल बजाज जैसे राष्ट्रीय विभूति संपन्न व्यक्तिमत्व का नाम उनके कार्यों की पहचान है। जमनालाल बजाज महात्मा गांधी के अहिंसा के मार्ग पर सदैव चलते रहे। उनके कार्यों का गौरव करते हुए श्री राजगोपालाचार्य ने कहा था," अपनी ध्येय-सिद्धि के लिए कोई भी प्रकार का निस्सीम त्याग करने की तैयारी जमनालालजी की है।" इसतरह झंडा सत्याग्रह की सफलता उनका राष्ट्र के प्रति प्रेम, सेवा, सद्भावना, आदर और समर्पण को स्पष्ट करती है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. उपाध्याय श्री हरीभाऊ, जमनालालजी, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, सं.1951
2. बिरला घनश्याम दास, जमनालालजी सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, सं.1942
3. उपाध्याय सुदीप-मुकुल, जमनालाल बजाज कथनी करनी एक-सी, जमनालाल बजाज जन्म शताब्दी समारोह समिति, प्रकाशन मुंबई,सं. 1989